VIBRANT GANGA

रूपनारायण नदी

दिव्यता की धारा

नमामि गंगे

भारतीय वन्यजीव संस्थान
Wildlife Institute of India

विस्तृत जानकारी

- रूपनाराण नदी छोटा नागपुर पठार में पश्चिम बंगाल के पुरूलिया जिले में तिलबनी पहाड़ियों के पास उत्पन्न होती है और द्वारकेश्वरी या धालकिसोर के नाम से जानी जाती है।
- पश्चिम मेदिनीपुर और हुगली जिलों की सीमा पर बांदर के पास, दो बारहमासी नदियों अर्थात द्वारकेश्वर और शिलाबाती के संगम के बाद, नदी का नाम रूपनारायण पड़ जाता है।
- यह पश्चिम बंगाल में गंगा नदी की एक प्रमुख दाहिने किनारे की सहायक नदी है।
- नदी की लंबाई लगभग 280 किलोमीटर है, जिसमें लगभग 11,350 वर्ग किलोमीटर का जल निकासी क्षेत्र है। पश्चिम बंगाल में पुरूलिया, बांकुरा, हुगली, हावड़ा, पश्चिम मेदिनीपुर और पुरबा मेदिनीपुर जिलों से गुज़रती हुई जिओंखली में हुगली नदी से मिलती है।
- नदी दो जैव–भौगोलिक क्षेत्रों से होकर बहती है, अर्थात गंगा के मैदान और दक्कन के पठार।
- रूपनारायण नदी बेसिन के दक्षिण–पूर्व में जलवायु उष्णकटिबंधीय है वहीं दक्षिण–पश्चिम में शुष्क उष्णकटिबंधीय है।
- द्वारकेश्वर, शिलाबती, कंगसाबती और दामोदर रूपनारायण नदी की प्रमुख सहायक नदियाँ हैं।

मुख्य विशेषताऐं

- रूपनारायण नदी बेसिन को समोच्च रेखा और नदी प्रणाली के आधार पर दो भागों में विभाजित किया गया है, जैसे कम विच्छेदित पठार (150 मीटर की औसत ऊंचाई के साथ लगभग 30 प्रतिशत) और जलोढ़ मैदान (30 मीटर की औसत ऊंचाई के साथ लगभग 70 प्रतिशत)।
- नदी ऊपरी क्षेत्र में अपेक्षाकृत संकीर्ण है, अधिकतम 280 मीटर की चौड़ाई के साथ, नीचे की तरफ बहते हुए इसकी चौड़ाई 4,250 मीटर तक हो जाती है।

रूपनारायण नदी को तीन क्षेत्रों मे विभाजित किया गया है–

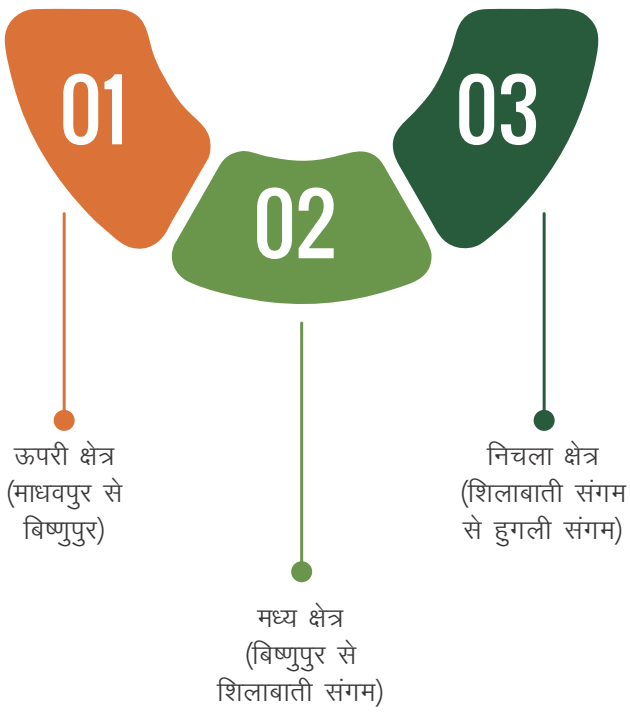

- बेसिन में उत्तरी उष्णकटिबंधीय शुष्क पर्णपाती वन का प्रभुत्व है।
- गांगेय डॉल्फिन (*प्लैटनिस्टा गैंजेटिका*) नदी के निचले क्षेत्र से रिपोर्ट की गई है।
- 13 फैमिली और 10 ऑर्डर से 31 जलीयपक्षी और जल से संबंधित पक्षियों की प्रजातियाँ दर्ज की गई हैं।
- बेसिन से मछली की 46 प्रजातियों को दर्ज किया गया है जिसमें हिल्सा (*तेनुलोसा इलीशा*) भी शामिल है।

संकटग्रस्त (EN) *प्रजातियाँ*

स्तनधारी

गांगेय डॉल्फिन

रोचक तथ्य

- रूपनारायण नदी कभी गंगा नदी के पश्चिमी निकास का निर्माण करती थी।
- ताम्रलिप्ति, भारत का एक महत्वपूर्ण प्राचीन बंदरगाह, रूपनारायण नदी के दाहिने किनारे पर स्थित था जो वर्तमान में तामलुक शहर है। चीनी विद्वानों और तीर्थयात्रियों युआन च्वांग, आई–त्सिंग और फा हिएन ने इसका दौरा किया, जिन्होंने इसे समुद्र के मुहाने पर 24 बौद्ध मठों वाले एक राज्य के रूप में वर्णित किया है। रोम के दार्शनिक प्लिनी और ग्रीक के भूगोलवेत्ता टॉलेमी के कार्यों में 'तालुक्ते' और 'तमालाइटस' के रूप में भी इसका उल्लेख मिलता है।
- बर्गभीमा काली मंदिर में 51 शक्तिपीठों में से एक, 'विभाषा', जहां देवी सती का बायां टखना गिरा था, तामलुक, पुरबा मेदिनीपुर में रूपनारायण नदी के तट पर स्थित है।
- 18वीं शताब्दी तक, नदी को यूरोपीय लोगों द्वारा कई नामों से जाना जाता था जैसे गैस्टाल्डी (1561) और डी बैरोस (1553–1613) के मानचित्रों में गंगा, ब्लैव द्वारा ग्वेंगा (1650), बॉरे द्वारा तमाली (1687), पायलट चार्ट में 'टॉम्बर्ली' (1703), वैलेंटाइन द्वारा 'पतराघट्टा' (1670) और रेनेल द्वारा 'रूपनारायण' (1776)।
- कहा जाता है कि गडियारा में हुगली के संगम पर स्थित फोर्ट मॉर्निंगटन (अब खंडहर है) का निर्माण, बंगाल प्रेसीडेंसी के पहले ब्रिटिश गवर्नर रॉबर्ट क्लाइव ने दो नदियों के ऊपर जहाजों की आवाजाही की रक्षा के लिए करवाया था।

नदी-परिदृश्य (रिवरस्केप) को बदलने वाले कारक

- सिंचाई, शहरी और औद्योगिक उद्देश्यों के लिए जल निकासी और रेत खनन ने नदी प्रणाली की संरचना, प्रवाह व्यवस्था और घटते भूजल को गंभीर रूप से प्रभावित किया है।
- तटबंधों के निर्माण ने नदी के आवास को बदल दिया है और नदी के मुक्त प्रवाह को बाधित कर दिया है।
- पर्यटकों की आमद में वृद्धि के साथ तेजी से शहरीकरण से उत्पन्न ठोस और तरल कचरे को नदी में फेंका जाना।
- तट पर अत्यधिक मछली पकड़ने और ईंट भट्टों के कारण जैव विविधता को नुकसान पहुचाना।

एन एम सी जी
राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन
जल शक्ति मंत्रालय
जल संसाधन, नदी विकास और
गंगा संरक्षण विभाग,
मेजर ध्यानचंद्र स्टेडियम, नई दिल्ली–110001

भारतीय वन्यजीव संस्थान
Wildlife Institute of India

जी ए सी एम सी
गंगा एक्वालाइफ कनजर्वेशन मॉनिटरिंग सेंटर
भारतीय वन्य जीव संस्थान
पोस्ट बॉक्स न. 18, मोहब्बेवाला, देहरादून–248002, उत्तराखंड
फोन न.- 91-135-260112-115
wii.gov.in/nmcg_phase2_introdution